समुद्रगुप्त की उपलब्धियों का वर्णन करें।

Ans → महान सम्राटों की श्रृंखला में अपना स्थान सुरक्षित करने वाला गुप्त सम्राट समुद्रगुप्त न केवल भारतीय इतिहास में बल्कि विश्व इतिहास में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। पराक्रमी, वीर एवं साहसी समुद्रगुप्त ने न केवल अपनी दिग्विजय से भारत के संपूर्ण राजनीतिक गगन मंडल पर अपना एकछत्र साम्राज्य स्थापित कर लिया था वरन साहित्यानुरागी तथा संगीत कला प्रेमी समुद्रगुप्त काव्य और कला की मधुमय त्रिधारा को प्रवाहित कर अपनी उस अमरकीर्ति को छोड़ गया, जिसका गुणगान आज भी इतिहासकार अपने ग्रंथों में मुक्तकंठ से करते हैं। V.A. Smith के शब्दों में— "समुद्रगुप्त अद्वितीय व्यक्तिगत गुणों एवं विविध असाधारण योग्यताओं से परिपूर्ण व्यक्ति था वह एक वास्तविक व्यक्ति, एक विद्वान, एक कवि, एक वीर योद्धा था।"

इस महान दिग्विजयी तथा प्रतापी सम्राट समुद्रगुप्त के शासन काल का इतिहास जानने के लिए मात्र चार प्रमुख साधन — प्रयाग प्रशस्ति लेख, एरण अभिलेख, गया और नालंदा के ताम्र फलक तथा मुद्राएं हैं, जिनसे हमें सम्राट की राजनीतिक, सांस्कृतिक, धार्मिक एवं आर्थिक उपलब्धि, व्यक्तिगत अभिरुचि, साहित्य-संगीत एवं कला प्रेम तथा उसके शासन काल की अनेकानेक गतिविधियों का प्रमाणिक ज्ञान प्राप्त हो पाता है।

यद्यपि समुद्रगुप्त के सिंहासनारूढ़ होने के समय के विषय में मत वैभिन्नता है, फिर भी विविध मतों की एक समान विवेचना के आधार पर यह अनुमान किया जाता है कि उसने 325 ई० से लेकर 375 ई० तक शासन किया होगा। यह सच है कि उसने

समुद्रगुप्त ने राजपद अपने पिता चन्द्रगुप्त प्रथम की इच्छा तथा सभासदों की सामूहिक सहयोग से प्राप्त किया था, लेकिन यह भी सत्य है कि उसे उत्तराधिकार संघर्ष के दौर से गुजरना पड़ा था, जिसमें विजय शील कर वह गुप्तवंश का सम्राट बन बैठा तथा भारत की तत्कालीन राजनीतिक स्थिति का लाभ उठाते हुए उसने अपनी दिग्विजय की डुगडुगी भी बजा दी। अर्थात् सत्तारूढ़ होते ही उसने विजय अभियान प्रारंभ कर दिए। उसके विजय अभियानों की विस्तृत चर्चा उसके राजकवि तथा संधि विग्रहिक हरिषेण रचित प्रयाग प्रशस्ति से प्राप्त होती है; जिसके आधार पर उसके विजयों को 6 भागों में विभक्त किया जा सकता है।

दिग्विजय योजना —>

एक महत्वाकांक्षी, वीर, साहसी, साम्राज्य वादी सम्राट होने के नाते समुद्रगुप्त साम्राज्य विस्तार की दिग्विजय की जो योजना बनाई थी, उसे 'धरणि-बंध' के नाम से संबोधित किया है, जिसका अर्थ होता है —

"समस्त पृथ्वी को अपने अधीन कर उसपर अपना आधिपत्य एवं प्रभुत्व स्थापित करना।"

इस क्रम में उसने सर्वप्रथम कदम विन्ध्य तथा हिमालय के बीच के क्षेत्रों को रखा, जिसे 'आर्यावर्त' कहते हैं। इसके राजाओं को पराजित और उनके राज्यों को अपने राज्य में सम्मिलित कर विशाल साम्राज्य की स्थापना की। इन राजाओं के नाम इस प्रकार हैं —

पहला है — रुद्रदेव, जिसका समीकरण डॉ० जयसवाल ने वाकाटक नरेश रुद्रसेन प्रथम से किया है। चूंकि प्रयाग प्रशस्ति में रुद्रदेव को आर्यावर्त के

Scanned with CamScanner

12

शासकों में बताया गया है और बानाके नरेश रुद्रसेन प्रयाग को दक्षिण पथ का राजा था। अत: डॉ० जयसवाल का मत ठीक नहीं जंचता है। इस तरह रुद्रदेव को आर्यावर्त का शासक मानना ही उचित है, जिसे समुद्रगुप्त ने पराजित किया था।

दूसरे — मतिल एवं तीसरे — नागदत्त को डॉ० जयसवाल ने नागवंशीय शासक माना है। चौथा है — चंद्रवर्मन, जिसका उल्लेख सुसुनिया पर्वत पर (पूर्वी बंगाल में) प्राप्त एक शिलालेख में है, जिसे विद्वानों ने मारवाड़ का शासक माना है। पांचवां है — गणपति नाग जो विदिशा का नागवंशी शासक था और जिसकी राजधानी पद्मावती थी। छठे, सातवें तथा आठवें राजा जो क्रमश: नागसेन, अच्युत तथा नंदि, नागवंशीय शासक माना गया है और अंतिम राजा बलवर्मा थे, जिनके संबंध में निश्चय पूर्वक कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।

इस विजय के पश्चात् चूंकि वह दक्षिण पथ को जीतना चाहता था। अत: आर्यावर्त और दक्षिण के बीच पड़ने वाले आटविक राज्य (वन्य प्रदेश) को पराजित करना आवश्यक था। प्रयाग प्रशस्ति में कहा गया है — 'परिचारकीकृत सर्वाटविक राजस्य' अर्थात् उसने आटविक राजाओं को जीता तथा उन्हें अपना सेवक बनाया। इस तरह उसने दक्षिण पथ के विजय का मार्ग प्रशस्त किया।

मध्य भारत के वनों को पार कर समुद्रगुप्त ने जिन राजाओं को शिकस्त दी, उनमें से 12 के नाम प्रयाग प्रशस्ति में उत्कीर्ण हैं जैसे — कौशल का महेन्द्र, महाकान्तार का व्याघ्रराज, केरल का मन्तराज, पिष्टपुर का महेन्द्रगिरि, कोट्टूर का स्वामीदत्त, एरण्डपल्ल का दमन, कांची का